सं स्रो.वि./एफ.डी./ो 34-83/58730.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. फरीदाबाद फोर्राज्य प्रा० लि०, प्लाट नें० 54, सैंक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम जन्म राय तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई स्रोदौंगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रीशोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 को धारा 10 की उत्यारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवारों का प्रयोग करते हुं हिरियाणा के राज्यताल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के प्रयोग प्रोशिंगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीशवाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यानिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम जन्म राय की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं॰ मो॰वि॰/एफ॰ डी॰/15-83/58737. - चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज राजो मशोन टूल्ज, इन्डस्ट्रीयल प्ताट नं 54,, सैक्टर 27-ए (I), फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री रामा शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई धौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग्न करते हुए, हरियोगा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिण्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री रामा शंकर की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त का हकदार है ?

सं० घो०वि०/एफ.डी./151-83/58744.—-चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज राजी मशीग टूल्ज, इन्डस्ट्रीयल प्लाट नं. 54, सैक्टर-270(H), फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम नगीना तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई घौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई भवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त था उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा व्यापिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्रीराम नगीना की सेवाओं का समापन न्यायोखित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो. वि./रोहतक/207-83/58751.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ए० के० इण्डस्ट्रीज, बहादुरगढ़, (2). ए०के० ग्राई० इण्टरनैशनल प्रा०लि०, बहादुरगढ़, के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641—1—श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं 3864-ए.एस.ओ(ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की

धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री महेन्द्र सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि /हिसार/80-83/58759.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) हरियाणा राज्य लघु सिचाई एवं नलकूप निगम, चण्डीगढ़ (2). कार्यकारी श्रिभयन्ता, हरियाणा राज्य लघु सिचाई एवं नलकुप निगम, डिवीजन नं ० ३, फतेहाबाद, के श्रीमक श्री जवाहर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हिर्स्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 9641—1-श्रम/2/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं० 3864—ए.एस.श्रो. (ई) श्रम—70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेसु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जवाहर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.िवः/भिवानी/71-83/58766.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि उप-मण्डल ग्रभियन्ता, विद्युत उप-मण्डल, जीन्द (2) कार्यकारी ग्रभियन्ता, विद्युत मण्डल, रोहतक, के श्रीमक श्री सुरेन्द्रपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

भौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिंघिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हु.रा प्रदान की गई मिनितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपल इसके हारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो. (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा ज्वत ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुरेन्द्रपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० थ्रो.िव./एफ.डी/26-83/58781.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज विशाल इन्जीनियरिंग कम्पनी, मार्फत गुडईयर इन्डिया लि०, मधुरा रोड, बल्लबगढ़, के श्रमिक श्री राम शंकर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रौद्योगिक श्रिधिक करण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम शंकर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक, 17 नवम्बर, 1983

संब्धो.वि./ग्रम्बाला/280-83/60302.--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि हरियाणा राज्य पश्चिहन, वैश्वल, के श्रमिक श्री महेश चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

. श्रौर चंूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रीदोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिविनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णव के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादाग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:---

ं क्या श्री महेश चन्द्र की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० भ्रो.वि./जी.जी.एन./121-83/60308.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोमा इन्जीचियरज, 38, कि॰ मि॰ जयपुर रोड़, खाण्डसा खतौला रोड़, गुंड़गांव, के श्रमिक श्री जिले सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान गई की शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1698 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंग्र के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों सथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है था विवाद से मुसंगत ग्रवथा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री जिले सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रोजि/ग्रम्बाला / 138-83 / 60315. - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैं हिरयाणा राज्य परिवहन, कैंथल के श्रीमक श्री कदम सिंह तथा उसके उबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

. श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्इ गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. -11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, क विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं हैं जोकि उक्त श्रिबन्धकों तथा श्रमिक के बीच करती विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री कदम सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./275-83/60321.— चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. एम सन्स मेनू टेक इन्हस्ट्रीज फ्लाट नं ॰ 277, सेंहटर-24, फरीद:ब:द. के श्रमिक श्री राम रूप सिंहतथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायर्निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल द्वारा इसके राण्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन श्रीद्यो-गिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं,

क्या श्री राम रूप सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?